थकावट

चित्रकार तपोश्री घोषाल

लेखक गुरबचन सिंह भुल्लर

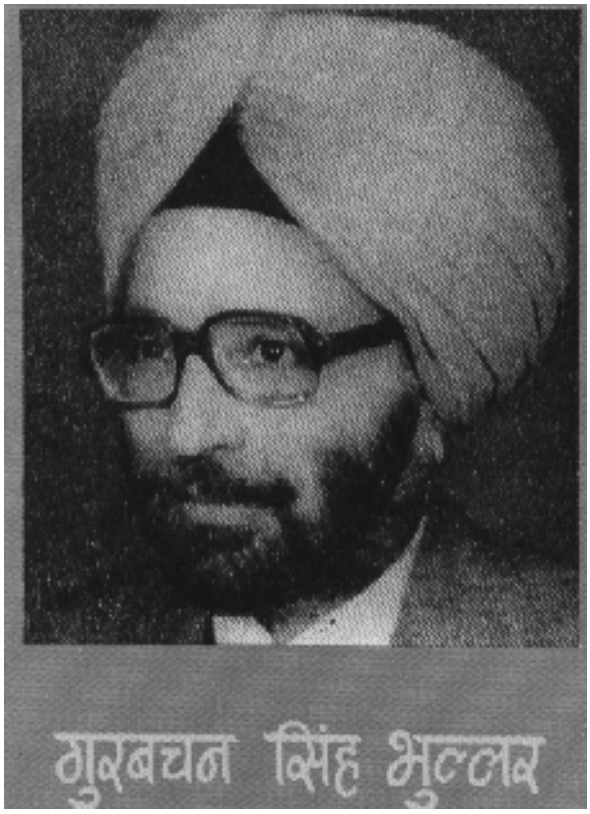

गुरबचन सिंह भुल्लर (जन्म 1937) का बचपन पंजाब के भटिंडा जिले में बीता। पंजाबी साहित्य में इनकी रुचि अपने पिता के कारण बढ़ी जो हर रोज अपने बच्चों को कुछ न कुछ ज़रूर पढ़कर सुनाते थे।

वीस वर्ष की कम आयु में ही भुल्लर जी ने कवितायें, लघु कहानियाँ और बच्चों को कहानियाँ लिखनी शुरू कर दी थीं। अपनी लेखनी द्वारा वे सामाजिक समस्याओं और कुरीतियों से लड़ते हैं -- खासकर जीवन देने वाली और लालन-पालन करने वाली नारी के प्रति समाज के रुखे व्यवहार से ! अपनी सीधी-सादी माँ की छवि सदा उन्हें लिखने के लिए प्रोत्साहित करती है।

थकावट में आसो एक ऐसी ही सीधी-सादी मगर निडर और आत्म-विश्वासी नारी है।

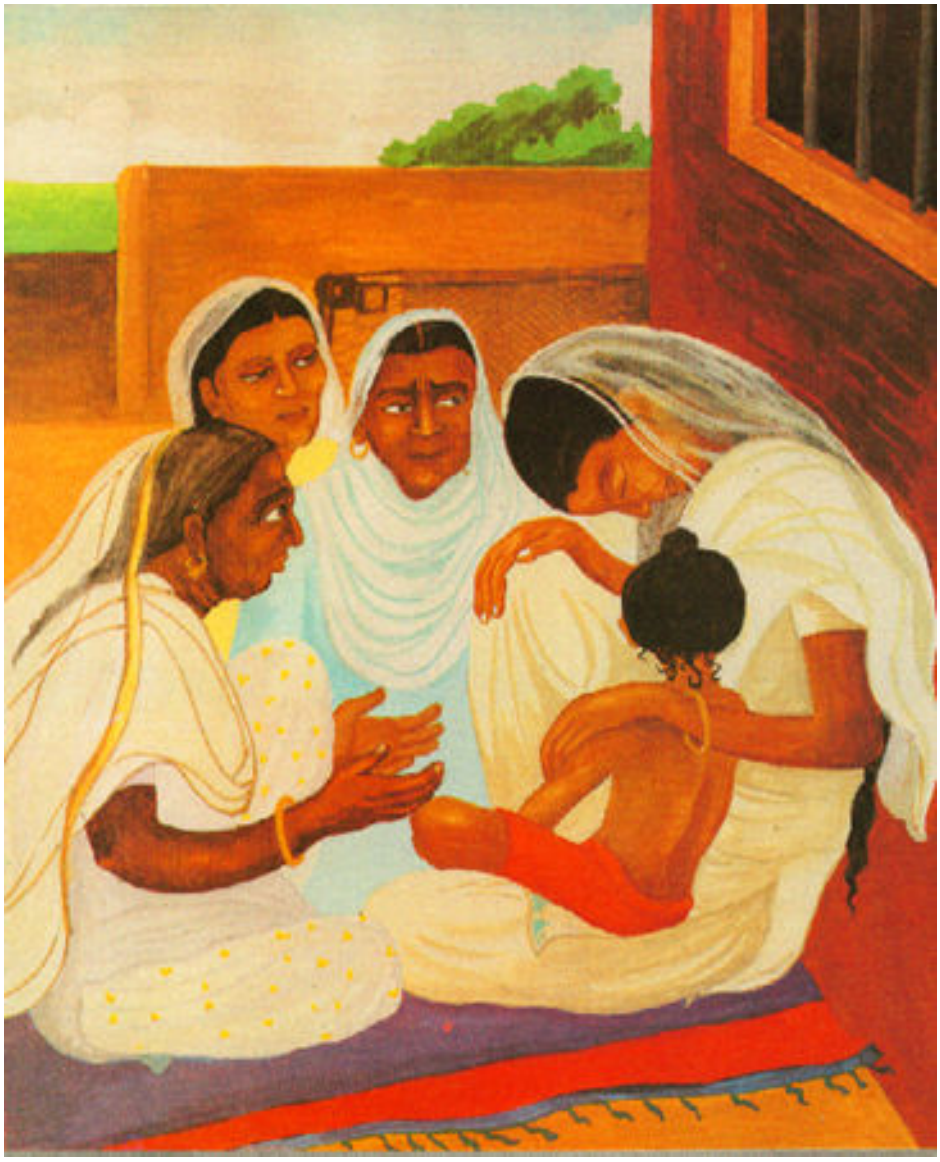

आसो की उमर अभी तीस साल की भी नहीं थी।

उसका पति, सुच्चा सिंह मर गया। सारा गाँव उसके विधवा होने पर दुखी था।

उसका लड़का गुरदेव अभी सात-आठ साल का ही था। आसो के लिए अब चारों ओर अंधेरा था।

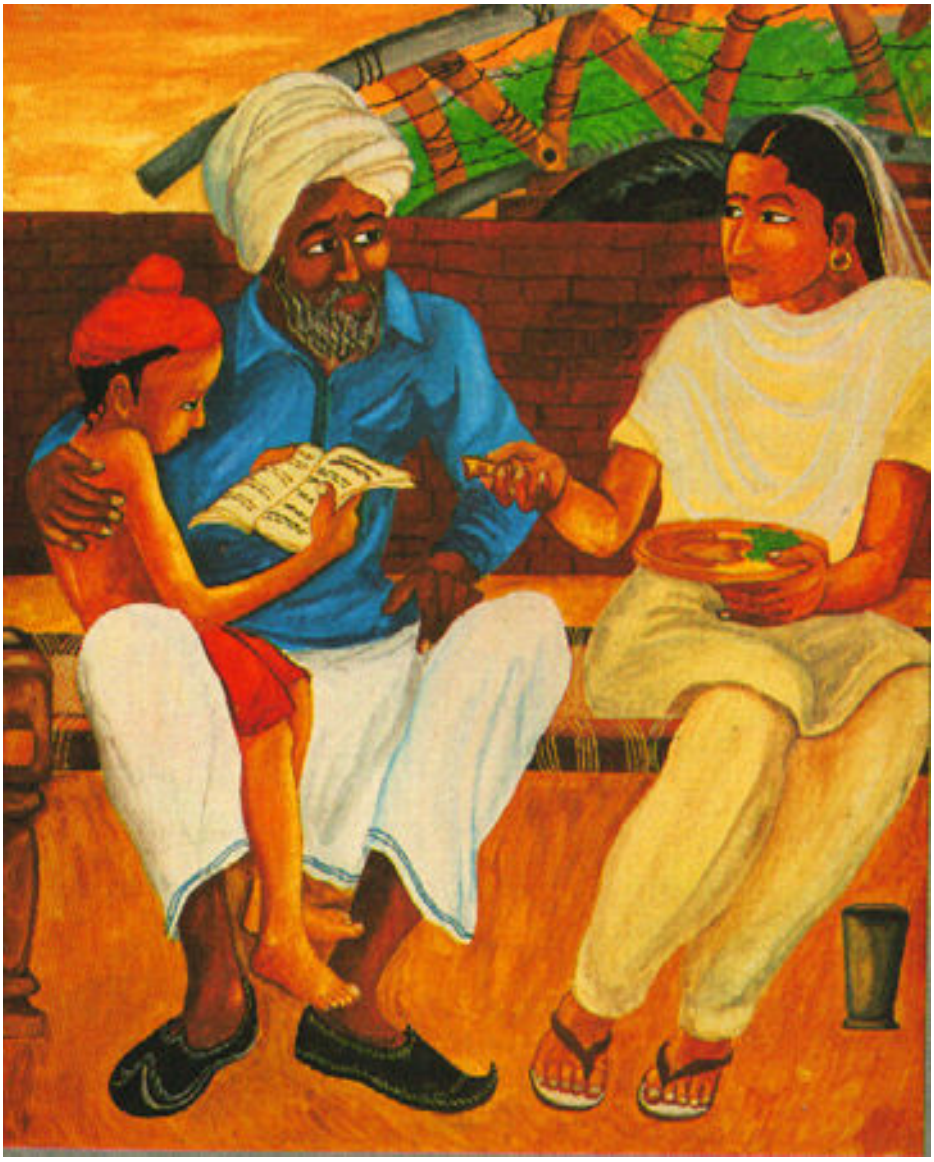

आसो का भाई जग्गर सिंह उस के पास रहने लगा। लेकिन उसे भी अपने गाँव वापिस जाना था।

उसने आसो को सलाह दी, 'खेती का सामान बेच दे, ज़मीन बटाई पर दे दे।'

तब एक दिन गुरदेव को खाना खिलाते हुए आसो ने सोचा, 'गुरदेव बड़ा होगा। खेती का काम खुद करेगा। तब सारा सामान फिर से जुटाना पड़ेगा।'

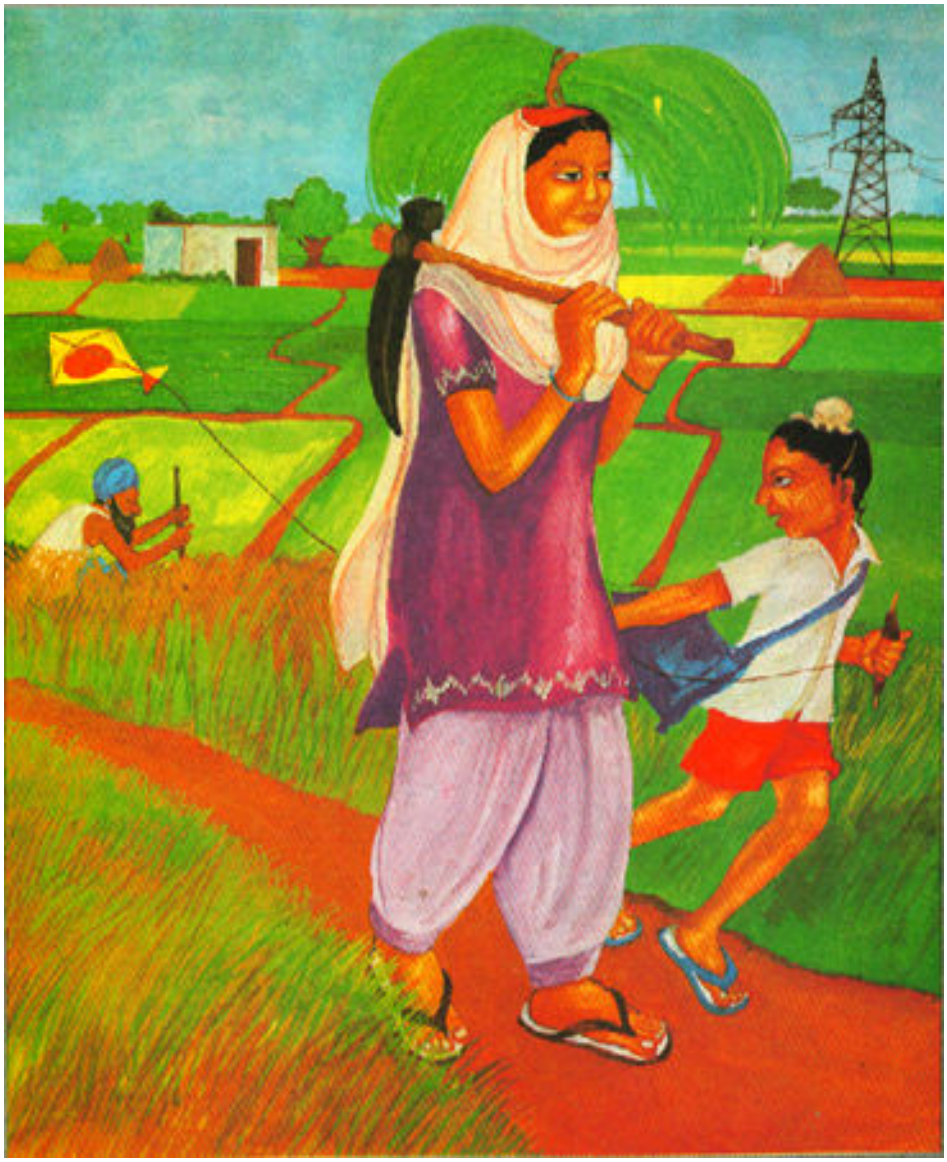

उसने फैसला किया कि वह खुद खेती करेगी।

आसो ने जग्गर सिंह को अपना फैसला सुनाया। वह आसो की बात से सहमत था।

अब आसो खेती का सारा काम खुद करती। गुरदेव को माँ और बाप, दोनों का प्यार देती।

काम करते हुए आसो को सुच्चा सिंह की बहुत याद आती। तब वह उदास हो जाती। पर गुरदेव को बड़ा होता हुआ देख उसका दुख कम हो जाता। एक नया जोश भर जाता।

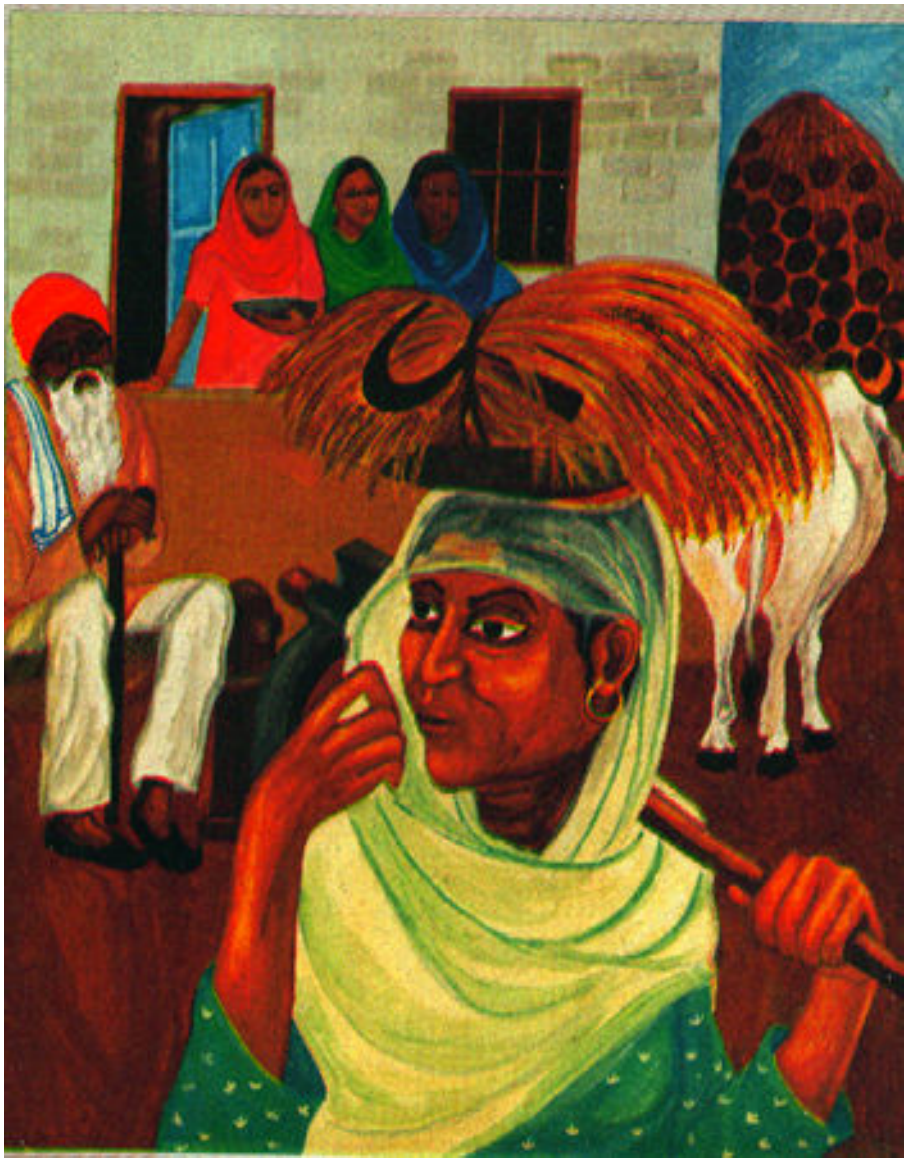

कुछ साल बाद गुरदेव जवान हो गया। गाँव के बुजुर्गों ने आसो को समझाया, 'बेटी ! तुमने बहुत दुख सहा है। लड़का जवान हो गया है। अब तुम अपनी थकावट उतारो।'

आसो घूँघट में से जवाब देती, 'बाबाजी, आपका हाथ सिर पर रहे। फिर कोई मुश्किल नहीं।'

औरतें कहतीं, 'अरी आसो ! तुम काम करते-करते थक गई हो। तुम आराम करो। मर्दों का काम अब मर्दों पर छोड़ दो।'

आसो उनकी बात टाल जाती, 'बहिन काम से कैसी थकावट।'

सभी लोग इसी तरह की सलाह देते। पर आसो को कभी थकावट महसूस न होती। आसो के लिए गुरदेव अभी भी छोटा बच्चा था। वह समझती कि गुरदेव अभी जीवन की कठिन राह पर अकेला नहीं चल सकता।

आज आसो को खेतों के लिए पानी मिलना था। गुरदेव ने उसे आराम करने को कहा और कहा कि वह पानी अकेले लगा लेगा।

आसो हंस कर बोली, 'तेरे जितनों से अभी नाक तक नहीं साफ़ होती। तू क्या अकेले पानी लगायेगा।'

गुरदेव ने सलाह दी, 'अच्छा माँ, मेरा दोस्त मोहन आज घर पर ही है। उसे ले जाता हूँ।'

पर आसो ने कहा, 'नहीं, नहीं। किसी की मदद क्या देखनी। हम खुद ही लगायेंगे पानी।' उसने गुरदेव को चीनी-पत्ती बांधने को कहा। खुद घड़ी उठाकर मीराब से समय मिलाने चल दी।

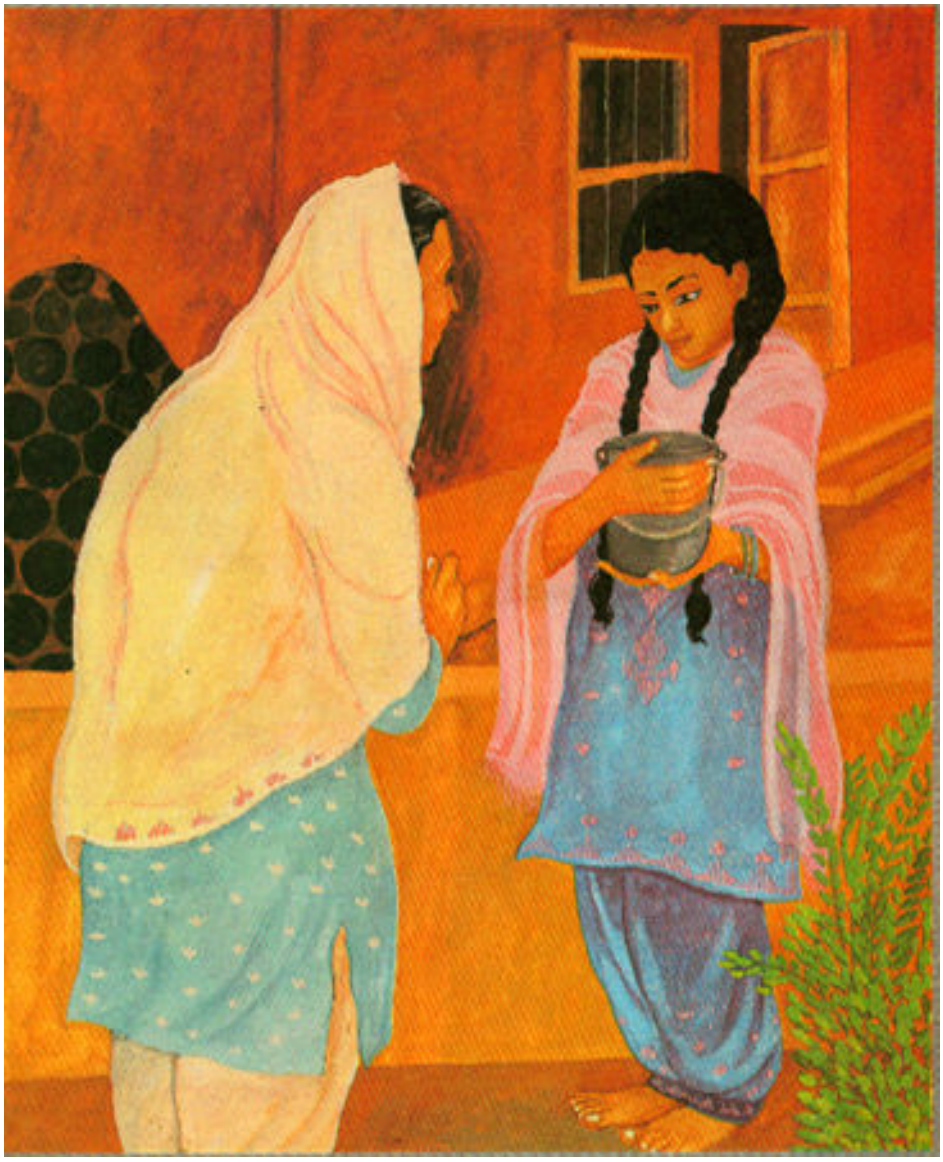

आसो घड़ी मिलाकर वापिस आई। उसने देखा कि पड़ौसी की लड़की भूरो लस्सी का डोल लेकर उनके घर से निकल रही थी।

भूरो उसे देख कर एक बारगी घबरा गई। मगर सम्भल कर बोली, 'चाची मैं लस्सी लेने आई थी। तुम कहाँ गईं थीं ?'

आसो ने जवाब दिया, 'मैं घड़ी मिला कर लाई हूँ। आज पानी लगाना है।'

आसो ने सोचा कि भूरो उसे देख कर घबराई क्यों ?

जब वह घर के अन्दर गई तो खिड़की से उसकी नज़र गुरदेव पर पड़ी। गुरदेव के हाथ में नया कढ़ा हुआ रूमाल था।

आसो के खांसने पर गुरदेव ने चौंक कर रूमाल जेब में डाल दिया। बोला, 'चलो, माँ, चलें। कहीं देर न हो जाये।'

आसो सब समझ गई। उसका बेटा अब जवान हो गया था।

आसो ने अपने बेटे से कहा, 'बेटा, अब तुम ही सम्भालो सब कुछ।' और वह चारपाई पर लेट गई। उसे लगा जैसे बरसों की थकावट से वह चूर-चूर हो चुकी है -- मंज़िल पर पहुँचने की मीठी-मीठी थकावट !